

जैनेंद्र कुमार के उपन्यासों में प्रेम और दांपत्य संबंधों की अवधारणा

संतोष कुमार

सहायक आचार्य (हिंदी), राजकीय महाविद्यालय, तीसा, जिला चंबा, हिमाचल प्रदेश

सारांश (Abstract)

हिंदी उपन्यास के विकासक्रम में जैनेंद्र कुमार का स्थान एक ऐसे कथाकार के रूप में महत्वपूर्ण है, जिन्होंने बाह्य सामाजिक यथार्थ की अपेक्षा मनुष्य के अंतर्मन, उसकी मनोवैज्ञानिक जटिलताओं, प्रेम, कामना, दांपत्य, नैतिकता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अपनी रचनात्मक चेतना का केंद्र बनाया। उनके उपन्यासों में प्रेम और विवाह केवल सामाजिक संस्थाएँ नहीं हैं, बल्कि व्यक्ति के आत्मिक विकास, मानसिक संघर्ष और अस्तित्व-बोध से जुड़े प्रश्न हैं। जैनेंद्र के यहाँ नर-नारी संबंधों का चित्रण पारंपरिक नैतिक मानदंडों की पुनरावृत्ति मात्र नहीं है; वे प्रेम और दांपत्य के बीच उपस्थित तनाव, आकर्षण, विश्वास, संदेह, त्याग, स्वतंत्रता तथा आत्मीयता की जटिलताओं को उद्घाटित करते हैं।

‘परख’, ‘सुनीता’, ‘त्यागपत्र’, ‘कल्याणी’, ‘सुखदा’ और ‘विवर्त’ आदि उपन्यासों में प्रेम संबंधों का स्वरूप अलग-अलग परिस्थितियों में विकसित होता है। कहीं प्रेम विवाह की संस्था से टकराता है, कहीं विवाह के भीतर प्रेम की खोज होती है और कहीं प्रेम व्यक्ति की नैतिक तथा आध्यात्मिक स्वतंत्रता का माध्यम बनता है। जैनेंद्र के नारी पात्र विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, क्योंकि वे केवल पुरुष-केंद्रित कथा के सहायक पात्र नहीं हैं, बल्कि अपने निर्णय, इच्छाओं, भावनाओं और आत्मसम्मान के साथ कथा के केंद्र में उपस्थित होते हैं। ‘सुनीता’, ‘मृणाल’, ‘कल्याणी’, ‘सुखदा’ तथा ‘मोहिनी’ जैसे पात्रों के माध्यम से लेखक ने स्त्री के मन की जटिलताओं और पुरुष-स्त्री संबंधों की समस्याओं को अभिव्यक्त किया है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में जैनेंद्र कुमार के उपन्यासों में प्रेम और दांपत्य की अवधारणा का मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, नैतिक, नारीवादी तथा अस्तित्ववादी दृष्टियों से अध्ययन किया गया है। साथ ही यह देखने का प्रयास किया गया है कि जैनेंद्र के लिए प्रेम केवल आकर्षण अथवा शारीरिक संबंध नहीं, बल्कि आत्मीयता, स्वतंत्रता, त्याग और दूसरे व्यक्ति के व्यक्तित्व को स्वीकार करने की प्रक्रिया भी है। शोध का निष्कर्ष यह है कि जैनेंद्र पारंपरिक विवाह संस्था को पूरी तरह अस्वीकार नहीं करते, बल्कि उसके भीतर मौजूद रूढ़ियों, अधिकार-बोध और दमनकारी प्रवृत्तियों की आलोचना करते हुए अधिक मानवीय और आत्मीय दांपत्य की कल्पना प्रस्तुत करते हैं।

बीज शब्द (Keywords): जैनेंद्र कुमार, प्रेम, दांपत्य, नर-नारी संबंध, मनोविश्लेषण, नारी चेतना, विवाह, नैतिकता, व्यक्तिवाद, स्वतंत्रता।

1. प्रस्तावना

हिंदी उपन्यास का विकास भारतीय समाज के परिवर्तनशील स्वरूप के साथ जुड़ा हुआ है। प्रेमचंद के उपन्यासों में जहाँ सामाजिक यथार्थ, आर्थिक विषमता, ग्रामीण जीवन, सामंती व्यवस्था और सामाजिक सुधार प्रमुख विषय रहे, वहीं प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास में मनुष्य के भीतर की दुनिया की ओर विशेष ध्यान गया। इसी संदर्भ में जैनेंद्र कुमार का उपन्यास-साहित्य एक महत्वपूर्ण मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है। उन्होंने कथा-साहित्य में बाहरी घटनाओं की अपेक्षा व्यक्ति के मन, उसकी इच्छाओं, कुंठाओं, आशंकाओं, द्वंद्वों और आत्मसंघर्ष को अधिक महत्व दिया।

जैनेंद्र के उपन्यासों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि उनके यहाँ प्रेम और दांपत्य संबंधों को सामाजिक व्यवस्था के सामान्य एवं स्वीकृत रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है। वे यह प्रश्न उठाते हैं कि क्या विवाह मात्र सामाजिक अनुबंध है? क्या पति-पत्नी का संबंध केवल सामाजिक कर्तव्य पर आधारित होना चाहिए? क्या प्रेम को विवाह की सीमा में ही स्वीकार किया जा सकता है? क्या व्यक्ति को अपने भावनात्मक जीवन के संबंध में स्वतंत्र निर्णय का अधिकार है? इन प्रश्नों के उत्तर खोजते हुए जैनेंद्र के पात्र अनेक प्रकार के मानसिक संघर्षों से गुजरते हैं।

जैनेंद्र की रचनाओं में नारी पात्रों की केंद्रीय उपस्थिति भी इसी प्रश्न को अधिक जटिल बनाती है। 'परख', 'सुनीता', 'त्यागपत्र', 'कल्याणी' और 'सुखदा' जैसे उपन्यासों के शीर्षक ही यह संकेत देते हैं कि स्त्री उनके कथा-संसार का केंद्रीय तत्व है। आलोचनात्मक अध्ययनों में भी यह रेखांकित किया गया है कि जैनेंद्र के अधिकांश उपन्यासों में नारी संबंधी कथ्य प्रमुख है और उनके अनेक उपन्यास नायिका-केंद्रित हैं।

इस दृष्टि से जैनेंद्र के साहित्य में प्रेम का प्रश्न केवल दो व्यक्तियों के बीच आकर्षण का प्रश्न नहीं रह जाता, बल्कि वह व्यक्ति और समाज, व्यक्ति और परिवार, स्त्री और पुरुष, शरीर और आत्मा तथा स्वतंत्रता और सामाजिक मर्यादा के बीच संघर्ष का प्रश्न बन जाता है।

2. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

जैनेंद्र कुमार के उपन्यासों में प्रेम की अवधारणा का अध्ययन करना।

उनके उपन्यासों में दांपत्य संबंधों के स्वरूप का विश्लेषण करना।

प्रेम और विवाह के बीच उत्पन्न तनाव का अध्ययन करना।

जैनेंद्र के नारी पात्रों की स्वतंत्र चेतना को समझना।

स्त्री-पुरुष संबंधों में मनोवैज्ञानिक तत्वों का विश्लेषण करना।

प्रेम, काम और नैतिकता के पारस्परिक संबंधों को रेखांकित करना।

विवाह संस्था के प्रति जैनेंद्र के दृष्टिकोण का विवेचन करना।

उनके उपन्यासों में व्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक मर्यादा के संघर्ष को स्पष्ट करना।

जैनेंद्र के प्रेम-दर्शन की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

3. शोध-परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन की मूल परिकल्पना यह है कि जैनेंद्र कुमार के लिए प्रेम केवल सामाजिक या शारीरिक संबंध नहीं, बल्कि मनुष्य की आंतरिक स्वतंत्रता और आत्मीयता से जुड़ा अनुभव है। उनके उपन्यासों में दांपत्य संबंध तभी सार्थक दिखाई देते हैं जब उनमें विश्वास, स्वतंत्रता, परस्पर सम्मान और आत्मीयता हो।

दूसरी परिकल्पना यह है कि जैनेंद्र विवाह संस्था के पूर्ण निषेध के पक्षधर नहीं हैं, बल्कि वे उस विवाह व्यवस्था का विरोध करते हैं जिसमें पति-पत्नी का संबंध अधिकार, संदेह, स्वामित्व और सामाजिक दबाव पर आधारित हो।

4. शोध-विधि

इस शोध में मुख्यतः विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक, मनोवैज्ञानिक और तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। जैनेंद्र कुमार के प्रमुख उपन्यासों को प्राथमिक स्रोत मानते हुए उनके पात्रों, कथानक, संवादों, मानसिक द्वंद्वों तथा स्त्री-पुरुष संबंधों का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त जैनेंद्र के साहित्य पर उपलब्ध आलोचनात्मक सामग्री और हिंदी उपन्यास संबंधी शैक्षणिक स्रोतों का सहारा लिया गया है।

5. जैनेंद्र कुमार और उनका उपन्यास-साहित्य

जैनेंद्र कुमार हिंदी के प्रमुख मनोविश्लेषणवादी एवं व्यक्तिवादी उपन्यासकारों में गिने जाते हैं। उनके प्रमुख उपन्यासों में 'परख', 'सुनीता', 'त्यागपत्र', 'कल्याणी', 'विवर्त', 'सुखदा', 'व्यतीत', 'जयवर्धन', 'मुक्तिबोध', 'अनंतर', 'अनामस्वामी' और 'दशार्क' उल्लेखनीय हैं।

उनके कथा-साहित्य का एक बड़ा हिस्सा व्यक्ति की आंतरिक दुनिया पर केंद्रित है। उनके पात्र सामान्य अर्थ में सामाजिक प्रतिनिधि पात्र कम और मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व अधिक हैं। वे अपनी इच्छाओं, भावनाओं और निर्णयों के साथ निरंतर संघर्ष करते हैं।

जैनेंद्र के उपन्यासों में नारी पात्र विशेष महत्व रखते हैं। उनके अनेक उपन्यासों के नाम ही नारी पात्रों के नाम पर हैं—'सुनीता', 'कल्याणी' और 'सुखदा'। यह नामकरण अपने आप में नारी की केंद्रीयता को व्यक्त करता है।

जैनेंद्र की विशेषता यह है कि वे स्त्री को केवल पत्नी या माँ की पारंपरिक भूमिकाओं में सीमित नहीं करते। वह प्रेम करने वाली, निर्णय लेने वाली, संघर्ष करने वाली और अपनी आंतरिक स्वतंत्रता की तलाश करने वाली व्यक्ति भी है।

6. जैनेंद्र के यहाँ प्रेम की अवधारणा

जैनेंद्र के उपन्यासों में प्रेम का स्वरूप बहुआयामी है। प्रेम में शारीरिक आकर्षण अवश्य उपस्थित है, लेकिन वह प्रेम की अंतिम सीमा नहीं है। प्रेम व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति की ओर आकर्षित करने के साथ-साथ उसे आत्मपरीक्षण के लिए भी बाध्य करता है।

जैनेंद्र के यहाँ प्रेम में तीन प्रमुख तत्व दिखाई देते हैं—

पहला—आकर्षण।

स्त्री और पुरुष के बीच स्वाभाविक आकर्षण को वे मनुष्य के व्यक्तित्व का हिस्सा मानते हैं।

दूसरा—आत्मीयता।

सच्चा प्रेम दूसरे व्यक्ति को अपने अधिकार में लेने के बजाय उसे समझने और स्वीकार करने की भावना पैदा करता है।

तीसरा—स्वतंत्रता।

प्रेम यदि व्यक्ति की स्वतंत्रता को समाप्त कर देता है तो वह जैनेंद्र के आदर्श प्रेम की कसौटी पर खरा नहीं उतरता।

इसी कारण उनके पात्र अक्सर यह प्रश्न करते हैं कि प्रेम में व्यक्ति दूसरे का स्वामी बने या साथी। जैनेंद्र का उत्तर स्पष्टतः दूसरे विकल्प की ओर जाता दिखाई देता है।

7. प्रेम और विवाह का द्वंद्व

जैनेंद्र के उपन्यासों की केंद्रीय समस्याओं में प्रेम और विवाह का संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में विवाह को सामान्यतः स्थायी और सामाजिक रूप से मान्य संबंध माना जाता है। प्रेम को भी लंबे समय तक विवाह के माध्यम से वैधता प्राप्त होती रही है। जैनेंद्र इस पारंपरिक समीकरण को चुनौती देते हैं।

उनके यहाँ प्रश्न यह नहीं है कि विवाह आवश्यक है या नहीं, बल्कि यह है कि विवाह का वास्तविक आधार क्या होना चाहिए।

यदि विवाह केवल सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक सुविधा या पारिवारिक दबाव पर आधारित हो, तो वह व्यक्ति को मानसिक रूप से संतुष्ट नहीं कर सकता। इसके विपरीत यदि पति-पत्नी के बीच आत्मीयता, विश्वास और परस्पर सम्मान हो तो विवाह प्रेम का रूप ग्रहण कर सकता है।

जैनेंद्र के पात्रों के जीवन में इसी विरोधाभास के कारण संकट उत्पन्न होता है। उनके उपन्यासों में कई बार विवाह सामाजिक रूप से सफल दिखाई देता है, लेकिन मानसिक स्तर पर वह विफल होता है।

8. 'परख' में प्रेम और दांपत्य

'परख' जैनेंद्र की आरंभिक महत्वपूर्ण कृति है। इसमें प्रेम, विवाह और व्यक्ति की आंतरिक भावनाओं के प्रश्नों को एक अलग दृष्टि से देखा गया है। जैनेंद्र ने 'परख' में सामाजिक उपन्यास की परंपरागत कथा-पद्धति से हटकर व्यक्ति के मानस को केंद्र में रखा। आलोचनात्मक स्रोत भी इसे जैनेंद्र के व्यक्तिवादी और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण की प्रतिनिधि कृति मानते हैं।

'परख' में प्रेम को केवल सामाजिक स्वीकृति से नहीं आँका गया। प्रेम की वास्तविकता पात्रों की मानसिक अनुभूति और भावनात्मक संबंधों में खोजी जाती है।

यहाँ विवाह का प्रश्न भी केवल सामाजिक व्यवस्था का प्रश्न नहीं है। विवाह व्यक्ति के भावनात्मक जीवन से जुड़ता है। जैनेंद्र यह संकेत देते हैं कि विवाह की सफलता बाहरी बंधन से नहीं बल्कि आंतरिक सामंजस्य से निर्धारित होती है।

9. 'सुनीता' में प्रेम और दांपत्य संबंध

'सुनीता' जैनेंद्र के प्रेम और दांपत्य संबंध संबंधी चिंतन की अत्यंत महत्वपूर्ण कृति है। इसका प्रकाशन 1935 में हुआ। उपन्यास के प्रमुख पात्र सुनीता, श्रीकांत और हरिप्रसन्न हैं।

उपन्यास में विवाहित स्त्री के जीवन में दूसरे पुरुष के प्रवेश से उत्पन्न मानसिक हलचल को केंद्र बनाया गया है। इस कारण 'सुनीता' में प्रेम और दांपत्य का प्रश्न अत्यंत जटिल रूप ग्रहण करता है।

सुनीता केवल किसी पुरुष की पत्नी बनकर नहीं रहती। उसके भीतर अपनी भावनाओं को समझने और व्यक्त करने की इच्छा है। उसके सामने पति के प्रति दायित्व और दूसरे व्यक्ति के प्रति आकर्षण के बीच द्वंद्व उत्पन्न होता है।

जैनेंद्र का उद्देश्य केवल विवाहेतर संबंध को स्थापित करना नहीं है। वे यह दिखाते हैं कि मनुष्य का मन सामाजिक नियमों से कहीं अधिक जटिल होता है। किसी व्यक्ति की भावनाओं को केवल नैतिकता के

पारंपरिक पैमाने से समझना पर्याप्त नहीं है।

‘सुनीता’ में दांपत्य की सबसे बड़ी कसौटी विश्वास है। यदि पति पत्नी को स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार कर सके, तो दांपत्य में व्यापकता आ सकती है। इस संदर्भ में जैनेंद्र का दृष्टिकोण अपने समय की तुलना में अत्यंत प्रयोगशील था।

10. ‘त्यागपत्र’ में प्रेम, विवाह और स्त्री की पीड़ा

‘त्यागपत्र’ जैनेंद्र के सबसे चर्चित उपन्यासों में से है। इसका प्रकाशन 1937 में हुआ। उपन्यास में मृणाल और प्रमोद के माध्यम से स्त्री के जीवन, विवाह, सामाजिक नैतिकता और मानसिक संघर्ष का मार्मिक चित्रण मिलता है।

मृणाल का चरित्र जैनेंद्र की नारी-दृष्टि को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। वह ऐसी सामाजिक व्यवस्था का सामना करती है जिसमें स्त्री के लिए नैतिकता के नियम कठोर हैं, जबकि पुरुष को अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता प्राप्त है।

मृणाल के जीवन में प्रेम और सामाजिक मर्यादा का संघर्ष गहरा है। उसकी पीड़ा केवल व्यक्तिगत नहीं है; वह उस सामाजिक व्यवस्था की पीड़ा है जो स्त्री के जीवन को निर्धारित करने का अधिकार स्वयं अपने हाथ में रखती है।

‘त्यागपत्र’ में विवाह संस्था का संकट इसी कारण उत्पन्न होता है कि विवाह में स्त्री की इच्छाओं और व्यक्तित्व के लिए पर्याप्त स्थान नहीं है।

जैनेंद्र का मनोवैज्ञानिक कौशल इस बात में है कि वे मृणाल को केवल पीड़ित स्त्री के रूप में नहीं देखते। वह अपने अस्तित्व, प्रेम और आत्मसम्मान के प्रश्नों से जूझती हुई चेतन व्यक्ति है।

11. ‘कल्याणी’ में दांपत्य की विडंबना

‘कल्याणी’ में स्त्री जीवन की पीड़ा और दांपत्य संबंधों की जटिलता का विश्लेषण मिलता है। यह उपन्यास 1939 में प्रकाशित हुआ।

कल्याणी का जीवन इस बात का उदाहरण है कि विवाह सामाजिक रूप से मान्य होने के बावजूद मानसिक सुरक्षा और आत्मीयता की गारंटी नहीं देता।

जैनेंद्र विवाह के भीतर स्त्री की स्थिति का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करते हैं। पति-पत्नी के संबंधों में अधिकार, अपेक्षा, संदेह और सामाजिक प्रतिष्ठा का दबाव प्रेम को प्रभावित करता है।

कल्याणी के माध्यम से यह प्रश्न उठता है कि क्या स्त्री का व्यक्तित्व विवाह के बाद समाप्त हो जाना चाहिए? क्या पत्नी का कर्तव्य केवल पति की इच्छाओं को पूरा करना है? जैनेंद्र इन प्रश्नों के माध्यम से दांपत्य की परंपरागत अवधारणा की आलोचना करते हैं।

12. ‘सुखदा’ में दांपत्य और वैचारिक संघर्ष

‘सुखदा’ जैनेंद्र के उन उपन्यासों में है जिसमें पति-पत्नी के संबंधों को वैचारिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर देखा गया है। उपलब्ध आलोचनात्मक सामग्री के अनुसार उपन्यास में पति-पत्नी के वैचारिक अंतर से उत्पन्न तनाव को प्रमुखता मिली है।

सुखदा का चरित्र जैनेंद्र की उस नारी-दृष्टि को सामने लाता है जिसमें स्त्री केवल दांपत्य संबंध की निष्क्रिय सदस्य नहीं है। वह विचार करती है, निर्णय लेती है और अपने जीवन की दिशा को लेकर प्रश्न उठाती है।

दांपत्य में यदि दोनों व्यक्तियों की इच्छाएँ, विचार और जीवन-दृष्टि एक-दूसरे से पूरी तरह अलग हों तो केवल विवाह का सामाजिक बंधन संबंध को सुखी नहीं बना सकता।

सुखदा में प्रेम की समस्या इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि यहाँ प्रेम व्यक्तिगत आकांक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व के बीच फँस जाता है।

13. 'विवर्त' में प्रेम की जटिलता

'विवर्त' जैनेंद्र के उपन्यास-साहित्य में प्रेम और संबंधों की जटिलता का एक और उदाहरण है। इसके प्रमुख पात्रों में जितेन, भुवनमोहिनी और नरेशचंद्र उल्लेखनीय हैं।

यहाँ भी प्रेम का प्रश्न केवल व्यक्तिगत आकर्षण का प्रश्न नहीं है। प्रेम व्यक्ति को अपने अस्तित्व और नैतिकता पर पुनर्विचार करने के लिए बाध्य करता है।

भुवनमोहिनी जैसे नारी पात्रों के माध्यम से जैनेंद्र यह दिखाते हैं कि स्त्री की भावनात्मक दुनिया को सरल नैतिक श्रेणियों में नहीं बाँटा जा सकता।

14. प्रेम और काम का संबंध

जैनेंद्र के साहित्य की चर्चा प्रेम और काम के प्रश्न के बिना अधूरी रहेगी। उनके उपन्यासों में शारीरिक आकर्षण को मनुष्य के जीवन से अलग करके नहीं देखा गया है। लेकिन कामना को केवल भौतिक इच्छा मानना भी जैनेंद्र की दृष्टि को सीमित करना होगा।

उनके यहाँ कामना मनुष्य के मन की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है। समस्या तब पैदा होती है जब सामाजिक नैतिकता व्यक्ति की स्वाभाविक इच्छाओं और भावनाओं को अपराध-बोध में बदल देती है।

जैनेंद्र प्रेम और काम के बीच संबंध स्थापित करते हुए यह संकेत देते हैं कि स्वस्थ संबंध में शरीर और मन का कृत्रिम विभाजन नहीं होना चाहिए। साथ ही उनका साहित्य यह भी दिखाता है कि केवल शारीरिक आकर्षण पर आधारित संबंध स्थायी आत्मीयता की गारंटी नहीं देते।

15. नारी की स्वतंत्रता और प्रेम

जैनेंद्र की नारी अपने प्रेम के संबंध में निर्णय लेने की आकांक्षा रखती है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों की नायिकाएँ परंपरागत स्त्री-छवि से अलग दिखाई देती हैं।

सुनीता, मृणाल, कल्याणी और सुखदा जैसी स्त्रियाँ अपने जीवन को केवल परिवार की इच्छा के अनुसार संचालित नहीं करतीं। वे अपनी भावनाओं को समझना चाहती हैं।

यहाँ जैनेंद्र का दृष्टिकोण आधुनिक नारी चेतना से जुड़ता दिखाई देता है। हालांकि उनके नारी पात्रों की स्वतंत्रता आधुनिक अर्थों में पूर्ण सामाजिक मुक्ति नहीं है; उनकी स्वतंत्रता प्रायः प्रेम, आत्मीयता और नैतिक आत्मनिर्णय से जुड़ी हुई है।

16. पति-पत्नी संबंध में विश्वास

जैनेंद्र के दांपत्य चिंतन में विश्वास की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

दांपत्य यदि संदेह पर आधारित हो तो पति-पत्नी एक-दूसरे के निकट होकर भी मानसिक रूप से दूर हो सकते हैं। इसके विपरीत विश्वास व्यक्ति को स्वतंत्रता देता है।

जैनेंद्र के कुछ पात्र इस विश्वास की सीमा को अत्यधिक विस्तार देने का प्रयास करते हैं। आलोचनात्मक अध्ययनों में यह भी उल्लेख मिलता है कि उनके कुछ उपन्यासों में पति अपनी पत्नी के दूसरे पुरुष के प्रति आकर्षण को उदार दृष्टि से स्वीकार करता है।

इस दृष्टिकोण से जैनेंद्र का प्रश्न अत्यंत आधुनिक है—क्या प्रेम का अर्थ स्वामित्व है? यदि पत्नी या पति किसी अन्य व्यक्ति के प्रति भावनात्मक आकर्षण अनुभव करे तो क्या संबंध समाप्त हो जाना चाहिए? जैनेंद्र इन प्रश्नों का सरल उत्तर नहीं देते, बल्कि उनके पात्रों को जटिल परिस्थितियों में रखकर पाठक को विचार करने के लिए बाध्य करते हैं।

17. दांपत्य में स्वामित्व की भावना

परंपरागत विवाह में पति-पत्नी को एक-दूसरे पर अधिकार रखने की सामाजिक स्वीकृति रही है। जैनेंद्र इस अधिकार-बोध की आलोचना करते हैं।

उनके यहाँ प्रेम और स्वामित्व में अंतर है। प्रेम दूसरे व्यक्ति की स्वतंत्र सत्ता को स्वीकार करता है, जबकि स्वामित्व दूसरे व्यक्ति को अपने नियंत्रण में रखना चाहता है।

यह अंतर जैनेंद्र के स्त्री-पुरुष संबंधों की समझ का मूल आधार है। पति पत्नी से प्रेम करे, लेकिन उसे अपनी संपत्ति न समझे—यह विचार जैनेंद्र के उपन्यासों में विभिन्न रूपों में सामने आता है।

18. मनोवैज्ञानिक दृष्टि

जैनेंद्र को मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार के रूप में पहचान दिलाने में उनके स्त्री-पुरुष संबंधों का बड़ा योगदान है। उनके पात्रों का वास्तविक संघर्ष बाहर की घटनाओं से अधिक उनके मन में चलता है।

उनके पात्र—

प्रेम करते हैं,

प्रेम को लेकर संशय करते हैं,

अपराध-बोध से गुजरते हैं,

सामाजिक मर्यादा और व्यक्तिगत इच्छा के बीच संघर्ष करते हैं,

आत्मत्याग करते हैं,

और अंततः अपने अस्तित्व को समझने की कोशिश करते हैं।

यही कारण है कि जैनेंद्र के उपन्यासों में बाहरी घटनाओं की अपेक्षा संवाद, आत्मसंवाद, मानसिक प्रतिक्रिया और अंतर्द्वंद्व अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

आलोचनात्मक अध्ययनों में भी उनके उपन्यासों की प्रमुख विशेषता के रूप में पात्रों की मानसिक प्रवृत्तियों और अंतर्द्वंद्व के सूक्ष्म विश्लेषण को रेखांकित किया गया है।

19. सामाजिक नैतिकता और व्यक्तिगत नैतिकता

जैनेंद्र के उपन्यासों में नैतिकता का प्रश्न बहुत जटिल है। वे सामाजिक नैतिकता को अंतिम सत्य मानने के बजाय व्यक्तिगत नैतिकता की संभावना पर विचार करते हैं।

समाज कह सकता है कि विवाहेतर प्रेम अनैतिक है। लेकिन जैनेंद्र का प्रश्न है कि क्या किसी संबंध की नैतिकता केवल उसके सामाजिक स्वरूप से निर्धारित हो सकती है?

उनके पात्रों के सामने यह संकट बार-बार आता है कि समाज द्वारा निर्धारित नैतिकता और उनकी आंतरिक नैतिक चेतना में अंतर है।

इस दृष्टि से जैनेंद्र का साहित्य नैतिक अराजकता का समर्थन नहीं करता, बल्कि नैतिकता की पुनर्व्याख्या करता है। वे बाहरी नियमों की अपेक्षा व्यक्ति की अंतःचेतना को अधिक महत्त्व देते हैं।

20. प्रेम और त्याग

जैनेंद्र के यहाँ प्रेम का एक महत्त्वपूर्ण रूप त्याग है। लेकिन यह त्याग भी पारंपरिक अर्थ में केवल स्त्री के आत्मसमर्पण तक सीमित नहीं है।

सच्चा प्रेम दूसरे व्यक्ति के हित को समझने की क्षमता पैदा करता है। कई बार व्यक्ति अपनी इच्छा का त्याग इसलिए करता है क्योंकि वह दूसरे व्यक्ति की स्वतंत्रता और सुख को अधिक महत्त्व देता है।

‘त्यागपत्र’ में मृणाल के जीवन को इसी संदर्भ में पढ़ा जा सकता है। उसकी पीड़ा केवल व्यक्तिगत असफलता नहीं बल्कि प्रेम, सामाजिक नैतिकता और आत्मसम्मान के बीच संघर्ष का परिणाम है।

21. स्त्री-पुरुष की परस्पर निर्भरता

जैनेंद्र स्त्री और पुरुष को पूर्णतः अलग-अलग संसारों के रूप में नहीं देखते। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, लेकिन पूरकता का अर्थ अधीनता नहीं है।

स्त्री को पुरुष की आवश्यकता हो सकती है और पुरुष को स्त्री की, लेकिन यह आवश्यकता स्वामित्व में परिवर्तित नहीं होनी चाहिए।

जैनेंद्र के पात्रों के माध्यम से यह विचार सामने आता है कि मनुष्य संबंधों के माध्यम से ही अपने व्यक्तित्व की अनेक परतों को पहचानता है।

इसलिए प्रेम जैनेंद्र के लिए आत्मविस्तार की प्रक्रिया भी है।

22. जैनेंद्र की नारी-दृष्टि : उपलब्धियाँ और सीमाएँ

जैनेंद्र ने हिंदी साहित्य में स्त्री को एक जटिल और संवेदनशील व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी नायिकाएँ सोचती हैं, प्रश्न करती हैं और निर्णय लेती हैं। वे केवल पुरुष पात्रों के जीवन की सजावट नहीं हैं।

उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उन्होंने स्त्री के मन की उन परतों को कथा का विषय बनाया जिन्हें पारंपरिक साहित्य में अक्सर उपेक्षित किया गया था।

फिर भी उनकी नारी-दृष्टि की सीमाएँ भी हैं। कुछ आलोचकों ने यह प्रश्न उठाया है कि जैनेंद्र की नारी-स्वतंत्रता अंततः फिर पति-पत्नी के संबंध और पारंपरिक नैतिक संरचनाओं की ओर लौट आती है। कुछ पाठों में यह भी देखा गया है कि उनकी नायिकाएँ स्वच्छंद प्रेम की ओर बढ़ने के बावजूद अंततः मानसिक विघटन अथवा दुःखान्त स्थिति में पहुँचती हैं।

अतः जैनेंद्र को न तो सरल रूप से नारीवादी घोषित किया जा सकता है और न ही परंपरावादी। उनकी नारी-दृष्टि दोनों के बीच एक जटिल संवाद निर्मित करती है।

23. अस्तित्ववादी परिप्रेक्ष्य

जैनेंद्र के प्रेम और दांपत्य संबंधों को अस्तित्ववादी दृष्टि से भी समझा जा सकता है। उनके पात्र अपने जीवन

का अर्थ स्वयं तलाशते हैं।

वे सामाजिक भूमिकाओं से संतुष्ट नहीं होते। पत्नी होना, पति होना, प्रेमिका होना या प्रेमी होना उनके लिए पर्याप्त पहचान नहीं है। वे यह जानना चाहते हैं कि इन भूमिकाओं के पीछे उनका वास्तविक व्यक्तित्व क्या है।

इसलिए प्रेम उनके यहाँ आत्म-खोज का माध्यम बन जाता है।

24. आधुनिकता और जैनेंद्र का प्रेम-दर्शन

जैनेंद्र का प्रेम-दर्शन अपने समय की सामाजिक संरचना के संदर्भ में आधुनिक दिखाई देता है। उन्होंने विवाह, प्रेम और स्त्री-स्वतंत्रता के प्रश्नों को ऐसे समय में उठाया जब इन विषयों पर खुलकर विचार करना सामाजिक रूप से सहज नहीं था।

उनकी आधुनिकता केवल पश्चिमी विचारों की नकल नहीं है। वह भारतीय सामाजिक और नैतिक संदर्भों के भीतर व्यक्ति की स्वतंत्रता की खोज है।

उनका प्रश्न यह है कि परंपरा मनुष्य के लिए है या मनुष्य परंपरा के लिए?

25. तुलनात्मक दृष्टि : प्रमुख उपन्यासों में प्रेम और दांपत्य

उपन्यास प्रमुख संबंध केंद्रीय समस्या

परख प्रेम और विवाह प्रेम की वास्तविकता और सामाजिक स्वीकृति

सुनीता पति-पत्नी एवं प्रेम संबंध आकर्षण, विश्वास और दांपत्य की सीमाएँ

त्यागपत्र स्त्री और विवाह संस्था सामाजिक नैतिकता बनाम व्यक्तिगत जीवन

कल्याणी पति-पत्नी संबंध दांपत्य की विडंबना और स्त्री की पीड़ा

सुखदा पति-पत्नी वैचारिक अंतर और भावनात्मक तनाव

विवर्त प्रेमी-प्रेमिका तथा दांपत्य प्रेम, आकर्षण और नैतिक द्वंद्व

इन उपन्यासों को एक साथ देखने पर स्पष्ट होता है कि जैनेंद्र के लिए प्रेम और दांपत्य अलग-अलग विषय नहीं हैं। दोनों एक-दूसरे से गहरे जुड़े हुए हैं।

26. जैनेंद्र के प्रेम-दर्शन की प्रमुख विशेषताएँ

जैनेंद्र के उपन्यासों में प्रेम की निम्नलिखित विशेषताएँ प्रमुख हैं—

26.1 प्रेम का मनोवैज्ञानिक स्वरूप

26.2 प्रेम बाहरी घटना से अधिक मानसिक अनुभूति है।

26.3 प्रेम में स्वतंत्रता

26.4 प्रेम दूसरे व्यक्ति को अपने नियंत्रण में रखने का नाम नहीं है।

26.3 प्रेम और आत्मीयता

सच्चे प्रेम का आधार परस्पर समझ और आत्मीयता है।

26.5 प्रेम और नैतिकता

26.6 प्रेम पारंपरिक नैतिकता से प्रश्न करता है और नई नैतिक चेतना की खोज करता है।

26.5 प्रेम और दांपत्य

विवाह प्रेम का विरोधी नहीं है, लेकिन प्रेम के अभाव में विवाह मात्र सामाजिक बंधन बन सकता है।

26.7 प्रेम और त्याग

26.8 प्रेम में आत्मकेन्द्रित स्वार्थ की अपेक्षा दूसरे व्यक्ति की स्वतंत्रता और सुख का विचार आवश्यक है।

27. समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता

आज विवाह और प्रेम के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन आया है। प्रेम-विवाह, अंतरजातीय विवाह, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, तलाक, सहजीवन, लैंगिक समानता और वैवाहिक अधिकार जैसे प्रश्न सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बन चुके हैं।

इन परिस्थितियों में जैनेंद्र के उपन्यासों का पुनर्पाठ अत्यंत उपयोगी है। उनके द्वारा उठाए गए कई प्रश्न आज भी प्रासंगिक हैं—

क्या विवाह में समानता आवश्यक है?

क्या पत्नी को पति के समान व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए?

क्या प्रेम का आधार अधिकार होना चाहिए या विश्वास?

क्या सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए व्यक्ति अपनी भावनाओं का दमन करे?

क्या विवाह केवल सामाजिक संस्था है या दो स्वतंत्र व्यक्तियों का आत्मीय संबंध?

क्या स्त्री की इच्छा को पुरुष की इच्छा के समान महत्व मिलना चाहिए?

इन प्रश्नों के कारण जैनेंद्र का साहित्य आज भी समकालीन विमर्श से जुड़ा है।

28. आलोचनात्मक मूल्यांकन

जैनेंद्र कुमार के प्रेम और दांपत्य संबंधी चिंतन का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि वे संबंधों को स्थिर और अपरिवर्तनशील नहीं मानते। उनके पात्र निरंतर अपने संबंधों की समीक्षा करते हैं।

उनके उपन्यासों की आलोचना इस आधार पर भी की गई है कि उनकी अत्यधिक मनोवैज्ञानिकता कभी-कभी व्यापक सामाजिक यथार्थ को सीमित कर देती है। कुछ आलोचक मानते हैं कि उनके पात्र अपने व्यक्तिगत द्वंद्व में इतने अधिक उलझे रहते हैं कि व्यापक सामाजिक संघर्ष पीछे चला जाता है।

यह आलोचना एक सीमा तक उचित है, लेकिन यही उनकी विशिष्टता भी है। उन्होंने हिंदी उपन्यास को बाहरी सामाजिक संघर्ष से हटाकर व्यक्ति के भीतर के संघर्ष की ओर मोड़ा।

उनकी भाषा में भी आत्मसंवाद और आंतरिक मनोभावों की अभिव्यक्ति विशेष महत्व रखती है। आलोचनात्मक मूल्यांकन में उनकी भाषा की सादगी और आंतरिक मनोभावों को व्यक्त करने की क्षमता को उल्लेखनीय माना गया है।

29. निष्कर्ष

समग्रतः कहा जा सकता है कि जैनेंद्र कुमार के उपन्यासों में प्रेम और दांपत्य संबंधों की अवधारणा अत्यंत जटिल, बहुआयामी और मनोवैज्ञानिक है। वे प्रेम को केवल शारीरिक आकर्षण अथवा विवाह की पूर्वपीठिका के रूप में स्वीकार नहीं करते। उनके लिए प्रेम मनुष्य की आंतरिक चेतना, आत्मीयता और स्वतंत्रता से जुड़ा हुआ अनुभव है।

जैनेंद्र विवाह संस्था का सीधा विरोध नहीं करते, बल्कि विवाह के उस रूप पर प्रश्न उठाते हैं जिसमें व्यक्ति की स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है। उनके अनुसार पति-पत्नी का संबंध अधिकार और स्वामित्व की अपेक्षा विश्वास, सहानुभूति और आत्मीयता पर आधारित होना चाहिए।

‘परख’ में प्रेम और विवाह की समस्या, ‘सुनीता’ में दांपत्य और विवाहेतर आकर्षण, ‘त्यागपत्र’ में स्त्री की पीड़ा तथा सामाजिक नैतिकता, ‘कल्याणी’ में दांपत्य की विडंबना, ‘सुखदा’ में वैचारिक संघर्ष और ‘विवर्त’ में प्रेम की जटिलता—इन सभी को एक साथ देखने पर जैनैन्द्र के प्रेम-दर्शन का व्यापक स्वरूप सामने आता है।

उनकी नायिकाएँ प्रेम करती हैं, प्रश्र करती हैं, संघर्ष करती हैं और अपने अस्तित्व की तलाश करती हैं। वे पारंपरिक अर्थों में आदर्श स्त्री नहीं हैं; वे मनुष्य हैं—अपनी इच्छाओं, कमजोरियों, आकांक्षाओं और निर्णयों के साथ।

जैनैन्द्र का सबसे बड़ा योगदान यही है कि उन्होंने स्त्री-पुरुष संबंधों को केवल सामाजिक नैतिकता के चश्मे से देखने के बजाय मनोवैज्ञानिक और मानवीय दृष्टि से देखने का आग्रह किया। उन्होंने यह स्थापित किया कि प्रेम में दूसरे व्यक्ति की स्वतंत्र सत्ता को स्वीकार करना आवश्यक है। दांपत्य की सफलता केवल सामाजिक वैधता से नहीं बल्कि भावनात्मक सामंजस्य से निर्धारित होती है।

इस प्रकार जैनैन्द्र कुमार का प्रेम-दर्शन आधुनिक भारतीय समाज में व्यक्ति और संबंधों के बदलते स्वरूप को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। उनके उपन्यास आज भी यह प्रश्न हमारे सामने रखते हैं कि क्या प्रेम मनुष्य को बाँधता है या मुक्त करता है? जैनैन्द्र के कथा-संसार का उत्तर यह संकेत देता है कि सच्चा प्रेम बंधन नहीं, बल्कि दूसरे व्यक्ति की स्वतंत्रता को स्वीकार करते हुए स्थापित होने वाली आत्मीयता है।

संदर्भ ग्रंथ एवं स्रोत (References)

1. जैनैन्द्र कुमार – परख, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. जैनैन्द्र कुमार – सुनीता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. जैनैन्द्र कुमार – त्यागपत्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. जैनैन्द्र कुमार – कल्याणी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. जैनैन्द्र कुमार – सुखदा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. जैनैन्द्र कुमार – विवर्त, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. जैनैन्द्र कुमार – काम, प्रेम और परिवार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. नगेन्द्र – हिंदी साहित्य का उपन्यास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
9. गणपतिचंद्र गुप्त – हिंदी उपन्यासों का विकास, हिंदी साहित्य संबंधी आलोचनात्मक ग्रंथ।
10. बच्चन सिंह – हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. नामवर सिंह – इतिहास और आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
12. रामस्वरूप चतुर्वेदी – हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
13. उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय – कथा साहित्य, एम.ए. हिंदी अध्ययन सामग्री।
14. ‘जैनैन्द्र कुमार के उपन्यासों में स्त्री चरित्र’, अपनी माटी, आलोचनात्मक आलेख।
15. ‘जैनैन्द्र कुमार’, मराठी विश्वकोश—जैनैन्द्र के उपन्यासों और उनके प्रमुख विषयों का परिचय।
16. ‘जैनैन्द्र कुमार’, राजकमल प्रकाशन—लेखक परिचय एवं प्रकाशित कृतियों की सूची।